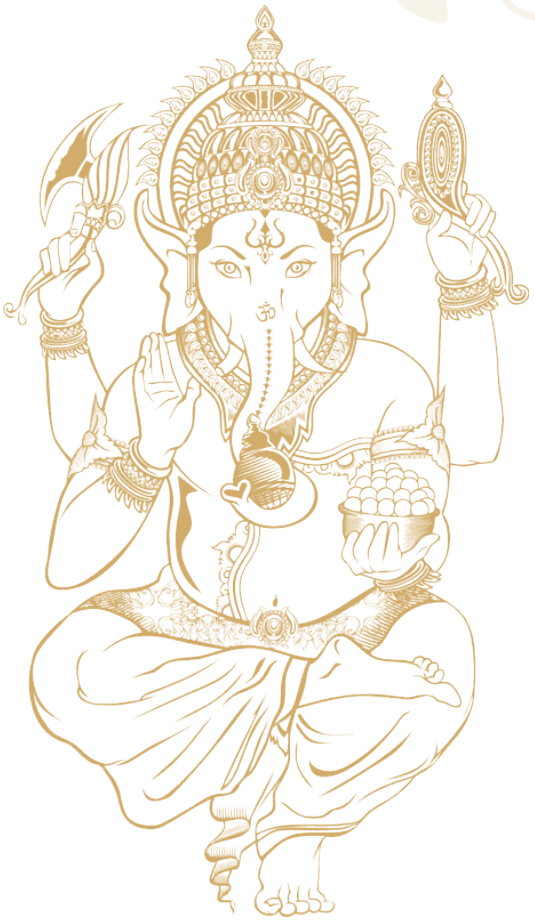

Shiv Apurva

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121479002

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
22/03/1992	जन्म तिथि	01/03/1994
रविवार	दिन	मंगलवार
घंटे 13:50:00	जन्म समय	17:53:00 घंटे
घटी 19:32:10	जन्म समय(घटी)	28:43:16 घटी
India	देश	India
Basti	स्थान	Ayodhya
26:48:00 उत्तर	अक्षांश	26:47:00 उत्तर
82:44:00 पूर्व	रेखांश	82:12:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:00:56	स्थानिक संस्कार	-00:01:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:01:08	सूर्योदय	06:25:48
18:11:09	सूर्यास्त	18:01:48
23:45:11	चित्रपक्षीय अयनांश	23:46:47

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 10वर्ष 1मा 17दि		11:40:33	कर्क	लग्न	सिंह	15:45:06	मंगल 0वर्ष 11मा 23दि	
बुध		08:12:45	मीन	सूर्य	कुंभ	16:54:28	गुरु	
10/05/2021		24:53:24	तुला	चंद्र	तुला	04:47:45	22/02/2013	
10/05/2038		01:47:57	कुंभ	मंगल	कुंभ	01:32:45	22/02/2029	
बुध	06/10/2023	15:45:14	मीन व	बुध व	मक	29:37:39	गुरु	13/04/2015
केतु	02/10/2024	13:10:10	सिंह व	गुरु व	तुला	20:52:30	शनि	24/10/2017
शुक्र	03/08/2027	16:33:17	कुंभ	शुक्र	कुंभ	27:23:17	बुध	30/01/2020
सूर्य	09/06/2028	21:18:28	मक	शनि	कुंभ	10:00:36	केतु	05/01/2021
चन्द्र	08/11/2029	11:37:25	धनु व	राहु व	वृश्चि	03:09:24	शुक्र	06/09/2023
मंगल	05/11/2030	11:37:25	मिथु व	केतु व	वृष	03:09:24	सूर्य	24/06/2024
राहु	25/05/2033	23:52:05	धनु	हर्ष	मक	01:06:09	चन्द्र	24/10/2025
गुरु	31/08/2035	24:58:18	धनु	नेप	धनु	28:46:04	मंगल	30/09/2026
शनि	10/05/2038	29:00:13	तुला व	प्लूटो व	वृश्चि	04:17:36	राहु	22/02/2029

लग्न-चलित

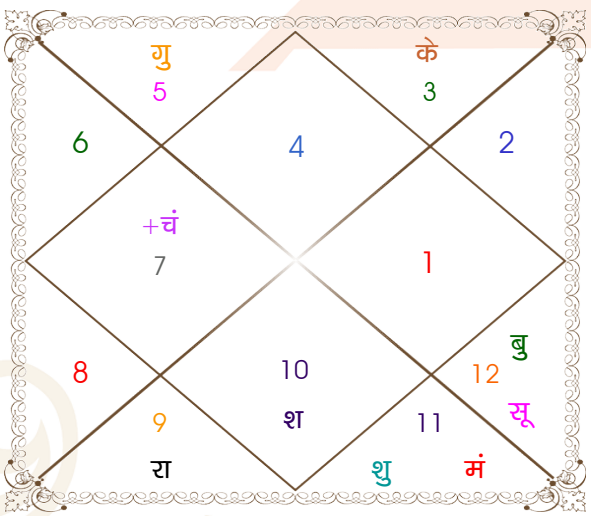

लग्न-चलित

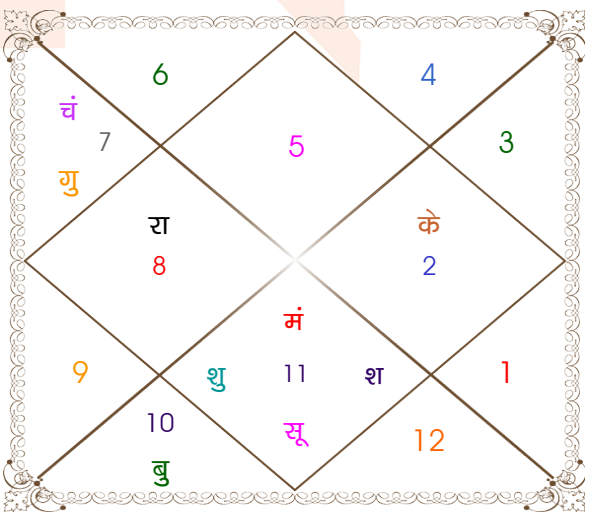

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	व्याघ्र	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	34.50		

Shiv का वर्ग सर्प है तथा Apurva का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Shiv और Apurva का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Shiv मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है। क्योंकि मंगल Shiv कि कुण्डली में अष्टम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Apurva मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Apurva कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Shiv कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Shiv कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Shiv तथा Apurva में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।